Harvard University
Urdu 102: Intermediate Urdu-Hindi

शोले

Part 10

वन में बसंती पत्थर फेंक कर आम तोड़ने की कोशिश कर रही है। अचानक बंदूक़ चलने की आवाज़ सुनाई देती है और एक आम पेड़ से गिर जाता है। जहाँ से आवाज़ आयी उस तरफ़ बसंती देखती है तो वीरू हाथ में पिस्तौल लिये खड़ा दिखाई देता है।

बसंती - अरे! यूँकि तुम यहाँ कैसे?

वीरू - यूँकि, यूँ ही। बोलो कौन-सा आम तोड़ना है।

बसंती - जो मैं आम बोलूँ, तुम गोली मार कर तोड़ सकते हो?

वीरू - यह हमारे बायें हाथ का खेल है। बड़े बड़े निशानेबाज़ हमारे पैर छूते हैं और कहते हैं, "वीरू! तुम्हारे जैसा निशानेबाज़ पैदा नहीं हुआ।"

बसंती - तुम तो बड़े निशानची लगते हो!

जय - हाँ जेम्स बौंड के पोते हैं ये।

बसंती - यूँकि कौन है?

वीरू - अरे, इसकी तो ऐसी बड़बड़ करने की आदत है। हाँ तो बताओ कौन सा आम तोड़ूँ?

बसंती - (पेड़ों की ओर देख कर बसंती कच्चे आम दिखाती है।) अम्म्म, एक वह, अम्म एक यह और एक यह। (वीरू निशान बाँध कर गोली चलाने को ही है जब पीछे से जय एक पेड़ के नीचे लेटे ही पिस्तौल चला कर आम गिराता है।) अरे यह तो तुम्हारा दोस्त भी...

वीरू - हाँ, हाँ। काफ़ी होशियार है लड़का। अभी मैं सिखा रहा हूँ। जल्दी सीख जाएगा।

बसंती - अँह, तुम मुझे भी सिखा सकते हो?

वीरू - हाँ हाँ, क्यों नहीं। तुम्हें भी सिखा सकता हूँ। तुम्हें तो मैं ...दो...दो दिन में सिखा सकता हूँ।

बसंती - दो दिन में सिखाएँगे?

जय - बहुतों को तो इन्होंने दो घंटे में सिखा दिया है।

बसंती - दो घंटे में?

वीरू - अरे, इस की तो आदत है बकबक करने की। तुम्हें पिस्तौल चलाना सीखना है न? तो इधर आओ। आओ। आओ। (एक आम की ओर इशारा करता है।) आ, वह, वह आम नज़र आ रहा है? आ रहा न?

बसंती - हाँ, हाँ।

वीरू - अब पकड़ो पिस्तौल। पकड़ो। (वीरू बसंती के बिल्कुल पीछे खड़ा हो कर आलिंगन सा करता है।) और यह हाथ ऐसे ऐसे ऐसे यहाँ। और यह उँगली यहाँ। और अब आँखें बन्द कर लो।

जय - मैंने तो आँख पहले ही बन्द कर रखी है।

बसंती - यूँ कि यह क्या कह रहे हैं?

वीरू - इस की तो आदत है बकबक करने की। तुम आँखें बन्द कर लो। बंद कीं? अब देखो वह आम नज़र आ रहा है?

बसंती - हम्म। यूँकि अजीब बात कही तुमने। आँखें बंद कर के आम दिखाई देता है क्या?

वीरू - तुमने क्या दोनों आँखें बंद कर लीं?

बसंती - हाँ।

वीरू - दोनों नहीं, बायीं आँख यह। यह आँख। बंद करो। और दूसरी आँख से निशाना बाँधो।

बसंती - अब?

वीरू - अब...अब...अब...गोली चला दो। (बसंती गोली चलाती है और वह और वीरू दोनों ज़मीन पर गिर जाते हैं।)

जय - लग गया निशाना।

बसंती - यूँकि हम सीख तो रहे थे गोली चलाना। लेकिन अब हमें दाल में कुछ काला लग रहा है।

वीरू - दाल? काला? काली दाल? मैं... मैं... मैं समझा नहीं।

बसंती - (गुस्से में) मगर मैं समझ गयी। यह तुम शहर के लोग समझते हो कि हम गाँव वालों को अक्ल तो है नहीं। लेकिन बसंती तुम जैसों को ताँगे में बिठा कर गाँव के चार चक्कर लगा कर टेसन तक छोड़ के आयेगी। हाँ!

वीरू - बसंती, मैं तुम्हें पिस्तौल चलाना सिखा रहा था। तुम मुझे ग़...ग़...ग़लत समझ रही हो।

बसंती - मैं अच्छी तरह समझती हूँ। अच्छी तरह समझती हूँ। अब तुम यहाँ बैठकर चलाओ पिस्तौल। बसंती चली अपने घर। जय रामजी की। (चलती है।)

****

जय ठाकुर की बहू को देखकर हारमोनियम बजाता है। गाँव के कुछ दृश्य - रहँट, कपड़े पीटकर धोने का काम, धुनिया रुई धुनता हुआ - दिखाई देते हैं। अचानक तीन घुड़सवार बंदूक लिये गोली चलाते हुए आते हैं। गाँव के सभी लोग अपना काम छोड़कर तितर बितर हो जाते हैं।

रामलाल - एक टीले पर खड़ा हो कर डाकुओं को देखता है।) ठाकुर! ठाकुर! (तीन डाकू गाँव के चौक में आते दिखते हैं।)

कालिया - अरे ओ काशीराम! ओ धौलिया! कहाँ मर गये सब लोग? (एक किसान को देखकर) आओ आओ शंकर। क्या लाये हो?

शंकर - मालिक, जी जवार लाया हूँ।

कालिया - मालिक के बच्चे। हमारे लिये यह आधी मुट्ठी ज्वार लाया है। और बाक़ी क्या अपनी बेटी के बारातियों को खिलाने के लिये रखी है।

शंकर - माई बाप, जितनी थी सब लाया हूँ।

कालिया - जिस दिन एक गोली उतर गयी खोपड़ी में जितना भेजा है सब बाहर निकल आएगा।

दूसरा डाकू - हरामज़ादा!

कालिया - क्या लाये हो धौलिया?

धौलिया - गेहूँ है मालिक।

कालिया - हम्म। ठीक है। रख दो सब माल वहीं पर। (ठाकुर आता है।)

ठाकुर - ठहरो।

कालिया - आओ ठाकुर आओ। अभी तक ज़िंदा हो।

ठाकुर - हाँ। और जब तक मैं ज़िंदा हूँ, गब्बर से कहना, तुम इस गाँव से एक दाना भी नहीं ले जा सकते।

कालिया - कौन रोकेगा हमें? तुम?

ठाकुर - हाँ। मैं और मेरे आदमी।

कालिया - ये आदमी? सुनो। ठाकुर ने हिजड़ों की फ़ौज बनायी है।

ठाकुर - मौत तुम्हारे सर पर खेल रही है कालिया। नज़र उठाकर देख लो।

कालिया - (नज़र उठाकर ऊपर देखता है। एक तरफ़ वीरू टंकी पर खड़ा और दूसरी तरफ़ पर जय एक टीले पर खड़ा दिखाई देते हैं।) दो? बस!

ठाकुर - तुम्हारे लिये काफ़ी है। काशीराम! सब सामान वापस रखवा दो।

कालिया - सोच लो ठाकुर। गब्बर को पता चला कि इस गाँव ने उस के आदमियों को अनाज नहीं दिया तो बहुत ख़ून ख़राबा हो सकता है। क्यों बेकार में... (वह बंदूक़ की तरफ़ हाथ बढ़ाता है तो वीरू उस के हाथ के पास ही एक गोली चलाता है।)

ठाकुर - अब जाओ। और गब्बर से कह देना रामगढ़वालों ने पागल कुत्तों के सामने रोटी डालना बन्द कर दिया है। चले जाओ यहाँ से।

कालिया - जाता हूँ ठाकुर। जाता हूँ। (अपने साथियों से) चलो।

शब्दावली

वन = forest (m)

पत्थर फेंकना = to throw stones (vt)

गिराना = to fell (vt)

आवाज़ = noise (f)

यूँकि = in this way (adv)

यूँ हुई = no reason.

बायें हाथ का खेल = child's play

निशानेबाज़ = marksman (m)

छूना = to touch (vt)

पैदा होना = to create, produce (vt)

पोता = grandson (m)

निशाना बाँधना = to take aim (vt)

होशियार = smart, clever (adj)

नज़र आना = to be visible (vi)

बिल्कुल = absolutely (adv)

x का आलिंगन करना = to embrace x (vt)

उँगली = finger (f)

बन्द करना = to close (vt)

अजीब = strange (adj)

दिखाई देना = to be visible (vi)

बायाँ = left (direction) (adj)

ज़मीन = ground (f)
निशाना लगना = to hit the mark (vi)
दाल में कुछ काला = something fishy
ग़ुस्सा = anger (m)
अक्ल = intellect (f)
ग़लत समझना = to misunderstand (vt)
अच्छी तरह = well (adv)
जय राम जी की = goodbye (victory to Ram)
घुड़सवार = horseman (m)
बंदूक = gun (f)
तितर बितर = scattered (adj)
चौक = square (m)
मरना = to die (vi)
जौहर = barley (m)
आधा = half (adj)
मालिक = owner, boss (m)
मुट्ठी = fist (f)
बाराती = the bridegroom's party (m)
खिलाना = to feed (vt)
खोपड़ी = skull (f)
बेचना = to sell (vt)
हरामज़ादा = bastard (m)
गेहूँ = wheat (m)
दाना = grain (m)
रोकना = to stop (vt)
हिजड़ा = eunuch (m)
फ़ौज = army (f)
मौत = death (f)
खेलना = to play (vt)
नज़र = gaze (f)
वापस रखवाना = to have (something) put back (vt)
अनाज = grain (m)
बढ़ाना = to increase, extend (vt)
पागल = crazy (adj)
कुत्ता = dog (m)
रोटी = roti (f)
डालना = to place, put (vt)